सद्गुरू टेऊँराम चालीसा

प्रथमे हरिहर ब्रह्म को, □ार □ार प्रणाम ।

नर तन धर त्रि□ेव जो, होया टेऊँराम ।।

तप्त धरा मरू□ेश में, मेघ □ेत सन्□ेश ।

त्यों जग के कल्याण हित, हरि धारै नर भेष ।।

सिन्ध □ेश की महिमा भारी, □ार □ार ऋग्वे□ उच्चारी
सिन्धु तीर □ावन प्रसङ्गा, □हती जहा□ज्ञान की गङ्गा
ऋषी मुनी अरू ज्ञानी ध्यानी, □ढ़ते जहा□ब्रह्म की □ानी
धन्य सिन्ध की धरती सारी, धन्य सिन्ध के नर अरू नारी
समय □ड़ा प्र□ल प्रवीना, वे□ □ुराणनि वर्णन कीना
काल चक्र □ुस्तर अति भारा, आ अधर्म ने □ाँव □सारा
धर्म कर्म भूले नर नारी, □ा□ कर्म में वृत्ति धारी
गीता में श्री कृष्ण सुनाया, ज□ ज□ भार भूमि □र आया
त□ त□ ही अवतार धरू□ मैं, सत्यधर्म की विजय करू□ मैं
प्रण □ालन हित ले अवतारा, आए खण्□ नगर मझारा
चेलाराम के आङ्गन माही□ खुशी भई स□ के मन माही□
कृष्णा मा□को □रश □िखाया, चतुर्भुजी निज रू□ □साया
शुक्ला तिथि षष्ठम आसाढ़े, प्रकट भए स□ काज सङ्वारे
शनीवार का □िवस सुहाना, शशिसम चमकत रू□ जहाना
लोली □ □ मात लु□ावे, गद् गद् गीत कण्ठ से गावे
□ालक वय से हरिगुन माही□ प्रीत लगी प्रभु सुमरन माही□
विद्या हेतु ज□ उन्हें □ठाया, सत्गुरू आसूराम तह□□ाया
गुरू □ोले हो स्वय□सिद्ध तुम, □रि□ूर्ण हो ब्रह्म शुध्□ तुम
□ैठ एकान्त में ध्यान लगाया, सहज समाधि के सुख को □ाया
खान □ान जग विषयों माही□ रञ्चक मन कह□लागत नाही□
लगन लगी गुरू शब□ मझारी, टूटी मोह कोह की जारी

बालक गण को साथ बिठाये, राम नाम की धुनी लगाए
इक दिन सिन्धु नदी किनारे, बालक गए नहाने सारे
वस्त्र उतार तट पर रख दीन्हें, टेऊँराम के सुपुर्द कीन्हें
बालक जल में खेलन लागे, खिल्लू था उन सब में आगे
खेलत खेलत खिल्लू डूबा, सबने देखा बड़ा अजूबा
वस्त्र सहित गुरू जल के माहीं, कूदे लुप्त भए फिर ताहीं
बालक भय से रोअन लागे, समाचार देवन कुछ भागे
शोकाकुल आये नर नारी, चमत्कार देखा इक भारी
खिल्लू अपनी गोद उठाये, सत्गुरू जी तब बाहर आये
अद्भुत ऐसा देख निजारा, विस्मित भया नगर तब सारा
खिल्लू कहा सुनो हे भाई, डूब गया जब मैं जल माहीं
सुन्दर देव वहाँ दो आए, पकड़ा मुझे, वरूण ढिग लाए
इतने में टेऊँराम पधारे, ताको देख प्रसन्न भए सारे
अभिवादन वरूण तब कीन्हा, निज सम्मुख ही आसन दीन्हा
कहन लगे कुछ सेवा बताएं, बोले खिल्लू लेन हम आए
प्रसन्न हो तब दीन्हा विदाई, सद्गुरू ने मम जान बचाई
धन्य धन्य गुरू टेऊँरामा, परम पवित्र तुम्हारा नामा
जय हो हे गुरूदेव तुम्हारी, सुख सागर तुम अति हितकारी
स्वर्ण आग सङ्ग मल ज्यों त्यागहिं, लेवत नाम पाप त्यों भागहिं
तप्त बुझावत हैं चन्द ज्यों, शीत हृदय करत नाम त्यों
इच्छित वस्तु कल्पतरू देव, नाम समुरते सब फल सेवे
अब तो सत्सङ्ग की धुनि लागी, मन की माया ममता त्यागी
डङ्का झाँझ लिया यकतारा, बाजा तबला साज प्यारा
गली गली में धूम मचाई, कृष्ण जैसे रास रचाई
प्रेम बढ़ा जब खण्डू माहीं, गुरू सोचा यहाँ रहना नाहीं
नाम कीर्ती जय जयकारा, इन बातों से सन्त न्यारा
यह विचार कर बिना बताए, जङ्गल में कुछ दिवस बिताए
आसन वहाँ जमाया स्थिर, हिंसक जन्तू का था ना डर
खोज खोज प्रेमी वहाँ आए, लौट चलें सबने समझाए
थिर आसन निश्चल मन ठाना, कहा अभी फिर लौट न जाना

घास फूस तृण कुटी बनाई, कन्द मूल खा जान सुखाई
गुरूमन्त्र का कर अभ्यासा, मेट दई जम की सब त्रासा
आतम अन्तर वृती लागी, जगत वासना सकली भागी
पावन भूमी वह जग माहीं, हरिजन करत तपस्या जाहीं
तिस भूमी की रज सिर लावत, गिरिजा को कह शंभु सुनावत
तीर्थ सम वह पूजन जोगी, जंह जंह नाम जपत है योगी
धन्य धन्य है सो अस्थाना, अमरापुर है उसका नामा
अमरापुर स्थान अमर है, दर्श करे सो फेर न मर है
चार धाम सम पवित्र धामा, अमरापुर है उसका नामा
तांकी महिमा कही न जाई, शेष शारदा पार न पाई
बैठ जहां गुरू ज्ञान सुनाया, सत्नाम साक्षी मंत्र जपाया
प्रेम प्रकाशी पंथ बनाया, सोए जीवों को था जगाया
जब तक गंग यमुन का पानी, तब तक अमर रहेगी कहानी
सूर्य चन्द्र प्रकाश हैं जौं लौं, नाम प्रकट जग में तव तौं लौं

अमर देश से आगमन, अमर देश प्रस्थान ।
अमरापुर वाणी अमर, अमरापुर स्थान ।।

आप अमर चरित्र अमर, अमर आपका नाम ।
तव शरनागत भी अमर, धन गुरू टेऊँराम ।।

साधु सन्त सब पूज्य हैं, सबको है प्रणाम ।
स्वासों में पर रम रहे, सत्‌गुरू टेऊँराम ।।

चालीसा गुरूदेव की, पढ़े सुने जन जोय ।
श्रध्दा मन में जो धरे, मुक्ती पावे सोय ।।